❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।

ऋग्वेद 1/15/5

हे प्रभो! आपकी मित्रता अटूट और अमृत है।

O Lord !
your friendship is ever lasting and divine.

वर्ष 40, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 जनवरी, 2017 से रविवार 8 जनवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

7 से 15 जनवरी, 2017 तक प्रगति मैदान में होगा वैदिक साहित्य प्रचार महायज्ञ

10 हिन्दी भाषी व 1 अंग्रेजी स्टाल पर फिर मचेगी धूम

हजारों नए महानुभावों तक 10/- रु. में पहुंचाएंगे सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश पर भी होगी 30% की विशेष छूट

उद्घाटन : 7 जनवरी, 2017 : प्रात:11:30 बजे **समापन : 15 जनवरी, 2017 : रात्रि 8 बजे**

हिन्दी : हॉल नं. 12ए स्टाल : 267-276 **अंग्रेजी साहित्य : हॉल नं. 18 स्टाल : 304**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900 एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री अनिरुद्ध आर्य मो. 9540040339 अथवा श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। – *महामन्त्री*

बस आप अपनाना सीख लें!!

तीन तलाक, इद्दत व शरीयत के कानून का डर दिखाकर मुस्लिम समाज में महिलाओं पर अत्याचार किया जाता है। ''मैंने दस साल तक यह जुल्म सहा है। मैंने दस महीने की बेटी को आंखों के सामने मरते हुए देखा है। मैं तिल-तिल कर रोज मरती रही। मैं अब शबनम नहीं दामिनी बनकर मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरीतियों के बारे में जीवन समर्पित कर दूंगी।'' यह बात शबनम से हिन्दू धर्म अपनाने वाली महिला दामिनी ने कही। यह दामिनी न तो किसी फिल्म की कलाकार है न किसी राजनैतिक दल की नेता, कि सुर्खिया बटोरने के लिए, पर्दे पर छाने के लिए इसने यह बयान दिया हो। बल्कि कल की शबनम आज दामिनी बनकर अपनी पीड़ा बयान कर रही है। दामिनी ने अपने ऊपर हुए एक-एक अत्याचार की कहानी बताई। उसने बताया कि जब वह 8वीं में थी, तभी रिश्ते के एक युवक से उसका निकाह करा दिया गया। इसके बाद जल्दी-जल्दी बच्चे पैदा करने के लिए कहा गया। दस साल में ही चार बच्चे हो गए। पहली बेटी को 2007 में पति ने पीट-पीट कर मार डाला। उसे हवा में ऊपर उछाल कर पटकता था। मेरे मना करने पर मुझे मारता-पीटता था। कई बार तलाक की धमकी देता था। मेरे दो बेटे और हैं उन्हें उसने अपने पास रखा हुआ है। न जाने कैसे होंगे मेरे बच्चे। 2014 में मुझे तीन तलाक देकर निकाल दिया।

दामिनी ने बताया कि पति द्वारा तीन तलाक देने के बाद चार माह इद्दत में बिताए। उसके बाद दूसरे मर्द के साथ हलाला के नाम पर उससे वेश्यावृत्ति कराई गयी। हर बात पर पिटाई और गालियों की बौछार सहना मेरी नियति बन गई थी।

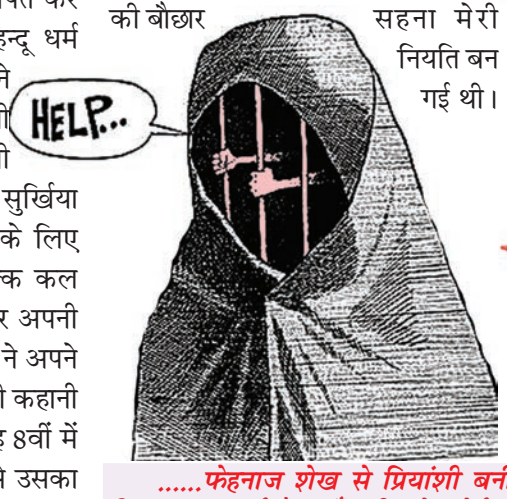

......फेहनाज शेख से प्रियांशी बनी युवती बताती है कि वह उस समाज से निकलकर आई है जहाँ स्त्री को कोई सम्मान नहीं मिलता जबकि वैदिक धर्म में आकर मुझे लक्ष्मी जैसा सम्मान मिला है...... मैंने भारतीय मुसलमान को कभी कोई युनिवर्सिटी, स्कूल या कॉलेज माँगते हुए नहीं देखा, न कभी वह अपने इलाके में अस्पताल के लिए आंदोलन चलाते हैं और न ही बिजली पानी के लिए! उन्हें चाहिए तो बस लाउडस्पीकर पर मस्जिद से अजान देने की इजाज़त और महिलाओं पर सातवीं शताब्दी के विवाह के सउदी अरब के नियम प्रचलन का कानून.....

अब मैं उससे आजाद हूं। मैं समाज में नरक भोग रही ऐसी महिलाओं के लिए लड़ूंगी। दामिनी आज उस काले कफन से आजाद है जिसकी आड़ में उसे यह दर्द भरा जीवन मिला। आज वह अपने 10 माह के बेटे का नाम ओम रखकर खुश है वो खुश होकर कहती है कि मैंने स्वेच्छा से वैदिक रीति से हिन्दू धर्म अपना लिया और मानवता के नाते उसे कुछ संगठनों ने रोजगार का साधन भी उपलब्ध करा दिये।

यह एक नारी की वेदना का किस्सा है जो उसके शोषण का हाल बयान करता है अमूमन ऐसे मामलों में समाज दया का भाव प्रकट तो करता दिख जाता है किन्तु आगे बढ़कर सहायता नहीं करता। लेकिन ऐसा नहीं कि सब ऐसे है अभी कुछ दिनों पहले ही राजस्थान गंगापुर सिटी की खबर थी कि एक मुस्लिम लड़की फेहनाज शेख वर्तमान में प्रियांशी शर्मा के नाम से जानी जाती है। प्रियांशी बताती है कि उसके घर में महिलाओं से वैश्यावृत्ति करायी जाती थी जो उसे पसंद नहीं था उसने इस नरक से छुटकारा पाने के लिए दामोदर नाम के एक युवक से सहायता मांगी। दामोदर और उसके परिवार ने फेहनाज शेख को न केवल सहायता दी बल्कि उसे अपने परिवार में दामोदर की पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया. फेहनाज शेख से प्रियांशी बनी युवती बताती है कि वह उस समाज से निकलकर आई है जहाँ स्त्री को कोई सम्मान नहीं मिलता जबकि वैदिक धर्म में आकर मुझे लक्ष्मी जैसा सम्मान मिला है।

वास्तव में मुसलमान समाज में सामान्य रुप से माना जाता है कि स्त्री मात्र पुरुष का एक शिकार है और पुरुष शिकारी। वह अपने पति की सहयोगी की बजाए नौकर समझी जाती है। छोटी-छोटी बातों में तलाक मिलना उसके बाद हलाला जैसी अमानवीय प्रथा से गुजरना लेकिन इन सबके बाद भी उसे कोई स्थाई ठिकाना मिले इस बात की कोई गारंटी नहीं होती है। क्योंकि अधिकांश मुस्लिम समाज उस आधुनिकता से डरता है जिसमें महिला समाज

– *शेष पृष्ठ 3 पर*

वेद-स्वाध्याय

भगवान् के गुप्तचरों से कुछ छिपा नहीं है

उत यो द्यामतिसर्पात् परस्तान्न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः।
दिवः स्पशः प्र चरन्तीदमस्य सहस्त्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम्।।- अथर्व. 4/16/4
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता : **वरुणः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यः उत**=जो भी कोई जीव **द्यां अति**=द्युलोक को पार करके **परस्तात्**=उससे भी परे **सर्पात्**=चला जाए **सः**=वह भी **वरुणस्य राज्ञः**=वरुण राजा से **न मुच्यातै**=मुक्त नहीं हो सकता, बच नहीं सकता। **दिवः अस्य**=प्रकाश-स्वरूप इस वरुण के **स्पशः**=गुप्तचर **इदम्**=इस सब ब्रह्माण्ड में **प्र चरन्ति**=अच्छी प्रकार घूम रहे हैं जो **सहस्राक्षाः**=हजारों आँखोंवाले होकर **भूमिम्**=इस भूमि को **अति पश्यन्ति**=अतिक्रमण करके देख रहे हैं-जिसे अन्य नहीं देख सकते उसे भी देख रहे हैं।

विनय - एक राष्ट्र (रियासत) के राजद्रोह का अपराधी किसी दूसरे राष्ट्र में भागकर उसके दण्ड से बच सकता है, परन्तु इस संसार के परिपूर्ण राजा-पाप निवारक सच्चे राजा-वरुण का अपराध करके, इस संसार के अटल नियमों को भङ्ग करके अर्थात् झूठ, द्रोह, हिंसा आदि करके, यदि कोई व्यक्ति चाहे कि वह कहीं भागकर इनके प्राप्तव्य प्रतिफलों से बच जाए तो यह असम्भव है। वरुण राजा के राज्य के बाहर मनुष्य कभी भी नहीं जा सकता। इस विस्तृत, दुर्गम, विशाल भूतल के किसी भी प्रदेश में जा छिपे, उससे हो सके तो चाहे मङ्गल, शुक्र आदि किसी अन्य लोक में भी चला जाए और यदि सम्भव हो तो चाहे वह इस सौर-मण्डल (दिवः) से भी परे कहीं जा पहुँचे, तो भी वह वरुण राजा के राज्य के पार नहीं जा सकता। वह चाहे कहीं चला जाए, अपना प्राप्तव्य दण्ड उसे अवश्य भोगना पड़ेगा, अपने किये हुए कर्म के बन्धन से वह कहीं भी जाकर नहीं छूट सकता। सांसारिक राजाओं (राजा कहलाने वालों) के गुप्तचर तो हमारे-जैसे अज्ञानी मनुष्य ही होते हैं, उन्हें बहुत धोखे दिये जा सकते हैं और वे असंख्यों भ्रमों के भाजन होते हैं, परन्तु उस वरुण राजा के दिव्य गुप्तचरों से मनुष्य कभी नहीं बच सकता। वे सब-कुछ जान लेने में समर्थ होते हैं। वे इस ब्रह्माण्ड भर में सर्वत्र व्यापक हैं। वे उस स्वयं प्रकाश वरुण देव रूपी सूर्य की अनन्त किरणें बनकर एवं ब्रह्माण्ड में फैले हुए हैं। वे उसकी ज्ञानशक्तियों के रूप में हैं, अतः हम मनुष्य जब किन्हीं ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करते हैं (शरीर से, वाणी से, या मन के मनन से कोई भी अनिष्ट आचरण करते हैं) तो उसी क्षण, उसी स्थान पर ये दिव्य वरुण-दूत इन्हें जान लेते हैं, बल्कि हमें अपने अदृश्य पाशों से तत्काल बाँध भी लेते हैं, परन्तु हमें कुछ ज्ञात नहीं होता। वरुण के 'स्पशों' (चरों) का यह कमाल देखो! यह परम गुप्तचरता देखो! वे हजारों आँखोंवाले, असंख्यों प्रकार से देखनेवाले 'स्पश', देश-काल आदि के सब व्यवधानों का अतिक्रमण करके सब ठीक-ठीक देखते हुए ब्रह्माण्ड-भर में विचर रहे हैं।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

इन्हें नागरिकता का अधिकार क्यों नहीं?

अलगाववादियों द्वारा एक बार फिर कश्मीर घाटी में बन्द का आह्वान किया है। हर बार की तरह बन्द के आह्वान के कारण में वही कलुषित मानसिकता की झलक दिखाई दे रही है जो पिछले तीन दशकों से घाटी को अशांत किये हुए है। इस बार बंटवारे के समय पश्चिमी पाकिस्तान से भागकर जम्मू-कश्मीर आए परिवारों को आवास प्रमाणपत्र देने का मामला प्रदेश में तूल पकड़ रहा है। हाल ही में महबूबा मुफ्ती सरकार ने विभाजन के समय पश्चिमी पाकिस्तान से भागकर जम्मू आए लोगों को आवास प्रमाणपत्र देने का ऐलान किया था। इस विवाद के कारण एक बार फिर प्रदेश सांप्रदायिक आधार पर बंट गया है। सरकार का कहना है कि इस फैसले का मकसद इन परिवारों को केंद्र सरकार की नौकरियों में आवेदन करने की योग्यता देना है। प्रदेश सरकार के पास ऐसे करीब 19,960 परिवारों का रेकॉर्ड है। सरकार का कहना है कि आवासीय प्रमाण-पत्र की मदद से ये परिवार खुद को भारत का नागरिक दिखाकर नौकरियों व अन्य जरूरी फायदों के लिए आवेदन कर पाएंगे। इस मुद्दे को लेकर ना केवल कश्मीर और जम्मू के बीच, बल्कि इन दोनों की राजनैतिक पार्टियों के बीच भी लकीर खिंच गई है।

बुरहान वानी की मौत पर सवाल उठाने वाले कम्युनिष्ट और तथाकथित सेकुलर दल इस मामले से किनारा सा करते नजर आ रहे हैं। लेकिन पश्चिमी पाकिस्तान रिफ्यूजी ऐक्शन कमिटी के अध्यक्ष लाभराम गांधी ने सरकार के फैसले का विरोध करने वालों की निंदा करते हुए कहा, ''सरकार रोहिंग्या मुसलमानों का समर्थन करे, इससे किसी को परेशानी नहीं है, लेकिन पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को लेकर उन्हें दिक्कत क्यों है?'' आखिर इन्हें नागरिकता का अधिकार क्यों नहीं? क्या अलगाववादी राष्ट्रविरोधी हैं? क्या वह घाटी की तरह जम्मू को मुस्लिम बहुल क्षेत्र में बदलना चाहते हैं? आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर में करीब 13,384 विदेशी भी रहते हैं। इनमें बर्मा से आये रोहिंग्या मुस्लिम भी शामिल हैं। दरअसल पश्चिमी पाकिस्तान से भागकर आए शरणार्थियों को पहली बार किसी सरकार ने पहचान पत्र देने का फैसला किया है। जबकि यह लोग जम्मू-कश्मीर सरकार को पूरा हाउसिंग टैक्स भी देते हैं। इस सबके बावजूद भी इनके अस्तित्व पर सवाल उठाया जा रहा है क्यों ?

पिछले दिनों ही ओपन सोर्स इंस्टीट्यूट के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर तुफैल अहमद द्वारा सवालिया निशान लगाते हुए पूछा गया था कि हाल के महीनों में म्यांमार से आ रहे रोहिंग्या मुस्लिम शरणार्थियों को जम्मू-कश्मीर में क्यों बसाया जा रहा है? अनुमान है कि अभी करीब 36000 रोहिंग्या शरणार्थी असम, पश्चिम बंगाल, केरल, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और जम्मू-कश्मीर सहित भारत के विभिन्न हिस्सों में रह रहे हैं। कठिनाई के वक्त किसी व्यक्ति को भोजन और आश्रय उपलब्ध कराना इंसानी स्वभाव है। लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि भारत सरकार इन शरणार्थियों को जम्मू-कश्मीर में ही क्यों बसा रही है, जहां इस्लाम और पाकिस्तान के कारण जिहादी प्रवृत्ति का संघर्ष छिड़ा हुआ है? हिन्दू शरणार्थियों के इस मुद्दे पर सभी सरकारी और गैर सरकारी लोग इतने बैचेन क्यों दिखाई दे रहे हैं। दूसरी ओर म्यांमार की सरकार ने कहा कि रोहिंग्या मुस्लिमों और बौद्धों के बीच संघर्ष में जिहादी तत्व शामिल हैं। इस साल सशस्त्र रोहिंग्या मुस्लिम उग्रवादियों ने हमला कर हमारे करीब 17 जवानों की हत्या कर दी थी। जिसके जवाब में भारत सरकार को बर्मा में सर्जिकल स्ट्राइक करनी पड़ी थी 30 सितंबर, 2013 को जारी अपने बयान में अलकायदा के सरगना उस्ताद फारूक ने म्यांमार, थाईलैंड, श्रीलंका और भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यकों का मुद्दा उठाया था। इसे अलकायदा की लुक ईस्ट पॉलिसी कहा जा सकता है। फारूक ने दुस्साहसिक रूप से भारत सरकार को चेतावनी दी थी कि कश्मीर, गुजरात के बाद असम में हुई हिंसा का बदला लिया जाएगा। पहले ही असम के मुस्लिमों में जिस कदर कट्टरता बढ़ रही है वह हमारी चिंताओं में लगातार इजाफा कर रही है।

यदि इस प्रसंग में बात संयुक्त राष्ट्र के द्वारा दी गई शरणार्थी या अल्पसंख्यकों की परिभाषा की करें तो मैं नहीं समझ पाता कि यह परिभाषा पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं पर लागू होती है या नहीं! लेकिन वे सरेआम उनको शरणार्थी मानने को तैयार नहीं हैं। आखिर कोई भी दल या सरकार इन हिन्दू शरणार्थियों के किसी भी सुख-दुख को समझने को तैयार क्यों नहीं है? जबकि मैं इससे भी आगे जाकर एक बात और कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के अंदर रहने वाले हिन्दू या वहां से आने वाले हिन्दू ये वो लोग हैं जो देश के विभाजन के समय हमारे नेतृत्व पर भरोसा करके वहां पर रह गये थे और वहां से कुछ वापस आ गये थे। पाकिस्तान या बांग्लादेश से आये हिन्दू उपेक्षित हैं और उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है। जबकि वो लोग वहां से जान नहीं सिर्फ अपना धर्म बचाकर भाग आये हैं। क्योंकि जान तो धर्म बदलकर भी बच सकती थी। आखिर कब सरकार इस तरफ ध्यान देगी?

पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थियों की बात हो या घाटी से विस्थापित पंडितों की, हमेशा यह सोचकर मामले को टाल दिया जाता है कि सारा मुसलमान तबका नाराज हो जाएगा। जबकि यह बात सच नहीं है। कुछ लोग होंगे और ऐसे लोग सब जगह होते हैं। जो हर जगह ऐसी सोच का प्रदर्शन करते हैं। जब तक राजनीति या राजनीतिक निर्णय इस तरह के दबाव में होते हैं तो वोट बैंक की राजनीति के परिणामस्वरूप उन लोगों की चिंता भी नहीं कर पाते जिनकी चिंता करना हमारा कर्त्तव्य है। मानवाधिकार के नाते हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हमारे नेतृत्व का भरोसा करके यदि वे आना चाहते हैं तो उनकी चिंता करें। यदि उनकी चिंता हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? हम उनकी नागरिकता की बात को उठाएं, यह हमारी जिम्मेदारी है। अगर हम इन विषयों को उठाएंगे तो अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी इसका संज्ञान लेंगे तभी इस समस्या का हल होगा। वरना यह कलुषित मानसिकता हमेशा नये खतरे पैदा करती रहेगी!!

-सम्पादक

बोध कथा

खुदा की बस्ती दुकॉ नहीं है

वन में बैठे युधिष्ठिर जी महाराज ध्यान में मग्न हुए। ध्यान से उठे तो द्रौपदी ने कहा-''महाराज! इतना भजन आप भगवान् का करते हो, इतनी देर तक ध्यान में बैठे रहते हो, फिर उनसे यह क्यों नहीं कहते कि इन संकटों को दूर कर दें? इतने वर्षों से आप और दूसरे पांडव वन में भटक रहे हैं। इतना कष्ट होता है, इतना क्लेश! कहीं पत्थरों में रात्रि व्यतीत करनी पड़ती है, कहीं काँटों में। कभी प्यास बुझाने को पानी नहीं मिलता, कभी भूख मिटाने को खाना नहीं। फिर आप भगवान् से क्यों नहीं कहते कि इन कष्टों का अन्त कर दें?''

युधिष्ठिर बोले-''सुनो द्रौपदी! मैं भगवान् का भजन करता हूँ तो सौदे के लिए नहीं। मैं भजन करता हूँ केवल इसलिये कि भजन करने में आनन्द मिलता है। वह सामने फैली हुई उस पर्वतमाला को देखो! उसे देखते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। हम उससे कुछ माँगते नहीं। हम देखते हैं। इसलिये कि देखने में प्रसन्नता होती है। इसी प्रसन्नता के लिए मैं भगवान् का भजन करता हूँ।''

आज लोग कहते हैं-''इतने घण्टे जाप किया, इसके बदले हमें क्या मिलेगा?'' कुछ नहीं मिलेगा। याद रक्खो-यह जाप नहीं, व्यापार है।***साभार : बोध कथाएं***

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक साहित्य में नारी

वैदिक साहित्य में नारी को बहुत आदरणीय स्थान दिया गया है। ऋग्वेद में स्त्री को ही घर कहा गया है। इसी आधार पर संस्कृत का सुभाषित है 'न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते' अर्थात् घर को घर नहीं कहत हैं अपितु गृहणि का ही घर कहा जाता है। विवाह के पश्चात् स्त्री को एक ओर पति, सास, ससुर और घर वालों की सेवा सुश्रुषा का निर्देश है तो दूसरी ओर उसे गृहस्वामिनी, गृहपत्नी आदि रूप में प्रस्तुत करते हुए उसे सास-ससुर, देवर-ननद आदि की साम्राज्ञी (स्वामिनी, मालकिन) कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि पत्नी को घर की व्यवस्था का पूर्ण अधिकार दिया जाता है और उसका कथन सबको मान्य होता है।

नारी सम्मान की यह प्रक्रिया न केवल वैदिक युग में थी, अपितु उपनिषदकाल और स्मृतिकाल में भी रही है। मनु का कथन है कि जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवताओं का निवास होता है और जहां इनका निरादर होता है वहां सारे कार्य निष्फल हो जाते हैं। अतएव नारियों को अलंकार, वस्त्र, भोजन आदि से सन्तुष्ट रखना चाहिए। ब्राह्ममण ग्रंथों में भी नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। तैत्तरीय ब्राह्मण में स्त्री को अर्धाङ्गिनी अर्थात् पुरुष का आधा भाग कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि जब तक मनुष्य का विवाह नहीं हाता तब तक वह अपूर्ण है, पत्नी को प्राप्त होने पर ही वह पूर्ण होता है। संत्तति परम्परा, गृहस्थ की ज्योति, गृहस्थ का वैभव और आमोद- प्रमोद सब कुछ पत्नी पर निर्भर है। शतपथ ब्राह्मण में स्त्रियों के अपमान और ताड़न आदि को निन्दनीय बताया गया है।

वैदिक काल में स्त्रियां शिक्षित होती थीं। उनका उपनयन होता था और उच्चशिक्षा प्राप्त करती थीं। वेदों में आध्यात्मिक शिक्षा के अतिरिक्त कन्याओं को काव्यकला, शस्त्रविद्या, ललित कलाओं, संगीत, नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने की भी व्यवस्था की जाती थी। वेदों में नृत्य, संगीत, वाद्यों के उल्लेख और कन्याओं द्वारा अभिनय आदि का उल्लेख उनके ललित कलाओं में निपुणता का द्योतक है। ऐतरेय ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि ललित कलाओं से आत्मा का परिष्कार होता है अर्थात् चारित्रिक और नैतिक उत्थान होता है। अतएव कन्याओं को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती है। यजुर्वेद और ऋग्वेद में नारी के युद्धकाल में पारंगत होने का वर्णन है। ऋग्वेद में उसे शत्रुरहित, शत्रुनाशक, विजयिनी एवं शत्रु को हराने वाली नाम से सम्बोधित किया गया है।

.....वैदिक काल में स्त्रियां शिक्षित होती थीं। उनका उपनयन होता था और उच्चशिक्षा प्राप्त करती थीं। वेदों में आध्यात्मिक शिक्षा के अतिरिक्त कन्याओं को काव्यकला, शस्त्रविद्या, ललित कलाओं, संगीत, नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने की भी व्यवस्था की जाती थी। वेदों में नृत्य, संगीत, वाद्यों के उल्लेख और कन्याओं द्वारा अभिनय आदि का उल्लेख उनके ललित कलाओं में निपुणता का द्योतक है।..... स्त्री को वैदिक साहित्य में सम्मानजनक स्थान दिया गया है वेदों में यह उच्चशिक्षा दी गयी है कि स्त्री अबला नहीं सबला है। वह स्वयं वीर और वीरपुत्रों की माता होने के कारण शत्रुओं या कुदृष्टि से देखने वालों का मर्दन कर सकने में समर्थ है।.....

उपनिषदों और स्मृतियों में भी नारी के गौरव का उल्लेख मिलता है। हारीत स्मृति का कथन है कि दो प्रकार की स्त्रियां होती थीं। एक सद्योद्वाहा तथा दूसरा ब्रह्मवादिनी। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर कुछ स्त्रियां तुरन्त विवाह कर लेती थीं और गृहस्थ का पालन करती थीं। उन्हें 'सद्योद्वाहा' कहा गया है। कुछ स्त्रियां, यज्ञ, वेदाध्ययन, स्वाध्याय, सत्संग और उच्चयोग विद्या में समय बिताती थीं, उन्हें 'ब्रह्मवादिनी' कहा जाता था। मैत्रेयी और गार्गी विदुषी नारियां हमारे समाज में हुई हैं। पाणिनी ने अध्यापन करने वाली शिक्षिका को 'उपाध्याय' और आचार्य का कार्य करने वाली स्त्री को 'आचार्या' नाम दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी नारियों ने गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया था।

स्मृतिकारों ने गृहस्थ आश्रम को सर्वोच्च स्थान दिया है। मनु का कथन है जिस प्रकार सारे प्राणियों के जीवन का आधार वायु है, उसी प्रकार सभी आश्रमों का आश्रम स्थल गृहस्थ आश्रम है। विवाह संस्कार के साथ गृहस्थ रूपी रथ के दो चक्र हैं। पति एवं पत्नी के कर्त्तव्यों का विशद वर्णन वैदिक साहित्य में मिलता है। ऋग्वेद में पत्नी को गृहपत्नी अर्थात् गृहस्वामी या गृहलक्ष्मी कहा गया है। इसका आभिप्राय यह है कि घर की व्यवस्था का पूर्ण उत्तरदायित्व स्त्री का होता है अतएव गृहस्वामी है। स्त्री को वैदिक साहित्य में सम्मानजनक स्थान दिया गया है वेदों में यह उच्चशिक्षा दी गयी है कि स्त्री अबला नहीं सबला है। वह स्वयं वीर और वीरपुत्रों की माता होने के कारण शत्रुओं या कुदृष्टि से देखने वालों का मद्रन कर सकने में समर्थ है। शिक्षा की समाप्ति के बाद योग्य वर-वधू का विवाह होता है। पति को पत्नी की पत्नी को पति की आवश्यकता अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए पड़ती है। इस भौतिक सुख प्राप्ति, संतान प्राप्ति सहयोगी और सहायक की प्राप्ति के लिए विवाह प्रथा का आरम्भ हुआ। पारिवारिक आर्थिक समृद्धि के लिए वर की आवश्यकता हुई और गृहव्यवस्था को भलीभांति संचालन के लिए वधू की। इस समन्वय के लिए विवाह एक सामाजिक आवश्यकता है। वधू के गुणों का भी वर्णन वैदिक साहित्य में है। कन्या ब्रह्मचारिणी हो, बुद्धिमती हो, मृदुभाषी हो, स्वाभिमानी हो, मधुर स्वभाव वाली हो एवं सन्तान जन्म देने में समर्थ हो। वेदों में पुत्र को भी बहुत महत्त्व दिया गया है। नारी के कर्त्तव्य पुत्र-प्राप्ति भी बताया गया है। वैदिक साहित्य में संस्कार का भी विशद वर्णन है। अतः हमारे वैदिक साहित्य में नारी को उच्चस्थान देखने को मिलता है। उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। हमारे वैदिक साहित्य में स्त्री को जो सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, उसी को वर्तमान समय में दिए जाने की आवश्यकता है।

वेदों में विवाह के कुछ विशेष उद्देश्यों का निर्देश है। ऋग्वेद में विवाह के उद्देश्य स्त्री को सौभाग्यवती होना तथा योग्य सन्तान को जन्म देना, साहसपूर्ण कार्य करना, धनलाभ, शक्ति संचय बताए गए हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि जब वर-वधू युवा हों और दोनों के हृदय एक दूसरे को प्राप्ति की कामना करते हैं तब उनका विवाह सम्बन्ध करना चाहिए। सच्चरित्र और सुशील कन्या का विवाह सुयोग्य वर से होना चाहिए। अथर्ववेद में विवाह संस्कार के सम्बन्ध में पाणिग्रहण, शिलारोहण, लाजाहोम, सप्तपदी, सूर्य दर्शन, हृदय स्पर्श, ध्रुव और अरुन्धती दर्शन, सुमंगलीकरण का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में वर-वधू की विदाई सजे हुए रथ पर करने का वर्णन है। अथर्ववेद में कहा गया है विवाह के पश्चात्, पतिगृह को जाती हुई वधू को उसके माता-पिता आदि निधि खर्च के लिए जो धन देते हैं वह स्त्रीधन होता है। वैदिक विधि से किया जाने वाला विवाह संस्कार अटूट होता था। शतपथ ब्राह्मण में इसकी पुष्टि की गयी है। वैदिक साहित्य में स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी। सीता और राम, द्रौपदी-अर्जुन, दमयन्ती-नल आदि के विवाह स्वयंवर प्रथा से ही हुए थे। स्वयंवर प्रथा में वर और इच्छुक वधुएं एकत्र होती थीं। स्वयंवर के लिए आए हुए वरों का पूरा परिचय दिया जाता था। प्राचीनकाल में संयुक्त परिवार की व्यवस्था का उल्लेख हमें मिलता है। वह पुरुष प्रधान व्यवस्था थी। संयुक्त परिवार के सम्बन्ध में सभी के कर्त्तव्यों का विशद वर्णन हमें प्राप्त होता है।

- रीना जायसवाल, निदेशिका,
वरदा आर्ट इन्स्टीट्यूट, गोरखपुर

प्रथम पृष्ठ का शेष

अब आप अपनाना सीख .....

को स्वतंत्रता की बात होती है। हमेशा समुदाय विशेष के बीच यह बेचैनी व्याप्त रहती है कि महिलायें अपने प्रतिबंधों से आगे आ जायेंगी और अगली पीढ़ी के लिए रास्ता खोल देगी। सब जानते हैं कि भारत में अभी पिछले दिनों तीन तलाक और हलाला जैसी कुप्रथा पर किस तरीके से मुस्लिम मौलाना उग्र होकर सामने आये थे।

यह एक शबनम से दामिनी बनी लड़की की कहानी नहीं है बल्कि यह एक सच है और ऐसी न जाने कितनी दामिनी आज शोषण की शिकार हैं उन्हें सहारे की जरूरत है बस अपनाने वाले दामोदर जैसे लोगों की बाट जोह रही हैं। सालों पहले मेरे एक बुजुर्ग कहा करते थे कि, मैंने भारतीय मुसलमान को कभी कोई युनिवर्सिटी, स्कूल या कॉलेज माँगते हुए नहीं देखा, न कभी वह अपने इलाके में अस्पताल के लिए आंदोलन चलाते हैं और न ही बिजली पानी के लिए! उन्हें चाहिए तो बस लाउडस्पीकर पर मस्जिद से अजान देने की इजाज़त और महिलाओं पर सातवीं शताब्दी के विवाह के सउदी अरब के नियम प्रचलन का कानून। 21वीं सदी में वह आज भी उस शरीयत को लागू करने के लिए जान देते हैं जिसमें सिर्फ एक नारी की कोमल भावनाओं का शोषण होता है। जिस कारण आज के समय के इन्सान के लिए यह एक चिन्तन का विषय है। इसलिए वह नारी आज अपने वर्तमान को पहचानने की कोशिश कर रही है और इसी कोशिश में वह सैकड़ों साल पीछे जाकर अरब देश से चली परम्पराओं की कितनी ही घटनाओं में खुद को शोषण का शिकार पाती है। दामिनी जैसी हर एक नारी अपने गालों पर आसुंओं के सूखे निशान लेकर इस समाज से आज अपने सवालों के जबाब लेने निकली है अपना पुराना नाम मिटाकर, अपना पता और धर्म मिटाकर जो कहती है अगर आपने मुझे कभी तलाश करना है तो जाओ हर देश, हर शहर की, हर गली का द्वार खटखटाओ-तब शायद जान पाओगे कि मैं एक शाप हूं या एक वरदान? मुझे सहारा देना पाप है या सम्मान?

- राजीव चौधरी

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

तैमूर को किसने हराया?

– डॉ. विवेक आर्य

हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे जातिवाद से ऊपर उठ कर सोच ही नहीं सकते। यही पिछले 1200 वर्षों से हो रही उनकी हार का मुख्य कारण है। इतिहास में कुछ प्रेरणादायक घटनाएं मिलती है। जब जातिवाद से ऊपर उठकर हिन्दू समाज ने एकजुट होकर अक्रान्ताओं का न केवल सामना किया अपितु अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन्हें यमलोक भेज दिया। तैमूर लंग के नाम से सभी भारतीय परिचित है। तैमूर के अत्याचारों से हमारे देश की भूमि रक्तरंजित हो गई। उसके अत्याचारों की कोई सीमा नहीं थी।

तैमूर लंग ने मार्च सन् 1398 ई. में भारत पर 92000 घुड़सवारों की सेना से तूफानी आक्रमण कर दिया। तैमूर के सार्वजनिक कत्लेआम, लूट खसोट और सर्वनाशी अत्याचारों की सूचना मिलने पर संवत् 1455 (सन् 1398 ई.) कार्तिक बदी 5 को देवपाल राजा (जिसका जन्म निरपड़ा गांव जिला मेरठ में एक जाट घराने में हुआ था) की अध्यक्षता में हरियाणा सर्वखाप पंचायत का अधिवेशन जिला मेरठ के गाँव टीकरी, निरपड़ा, दोगट और दाहा के मध्य जंगलों में हुआ।

सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये – (1) सब गांवों को खाली कर दो। (2) बूढे पुरुष-स्त्रियों तथा बालकों को सुरक्षित स्थान पर रखो। (3) प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति सर्वखाप पंचायत की सेना में भर्ती हो जायें। (4) युवतियाँ भी पुरुषों की भांति शस्त्र उठायें। (5) दिल्ली से हरिद्वार की ओर बढ़ती हुई तैमूर की सेना का छापामार युद्ध शैली से मुकाबला किया जाये तथा उनके पानी में विष मिला दो। (6) 500 घुड़सवार युवक तैमूर की सेना की गतिविधियों को देखें और पता लगाकर पंचायती सेना को सूचना देते रहें।

पंचायती सेना – पंचायती झण्डे के नीचे 80,000 मल्ल योद्धा सैनिक और 40,000 युवा महिलायें शस्त्र लेकर एकत्र हो गये। इन वीरांगनाओं ने युद्ध के अतिरिक्त खाद्य सामग्री का प्रबन्ध भी सम्भाला। दिल्ली के सौ-सौ कोस चारों ओर के क्षेत्र के वीर योद्धा देश रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने रणभूमि में आ गये। सारे क्षेत्र में युवा तथा युवतियां सशस्त्र हो गये। इस सेना को एकत्र करने में धर्मपालदेव जाट योद्धा जिसकी आयु 95 वर्ष की थी, ने बड़ा सहयोग दिया था। उसने घोड़े पर चढ़कर दिन रात दूर-दूर तक जाकर नर-नारियों को उत्साहित करके इस सेना को एकत्र किया। उसने तथा उसके भाई करणपाल ने इस सेना के लिए अन्न, धन तथा वस्त्र आदि का प्रबन्ध किया।

प्रधान सेनापति, उप-प्रधान सेनापति तथा सेनापतियों की नियुक्ति

सर्वखाप पंचायत के इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से वीर योद्धा जोगराज सिंह गुर्जर को प्रधान सेनापति बनाया। यह खूबड़ परमार वंश का योद्धा था जो हरिद्वार के पास एक गाँव कुंजा सुन्हटी का निवासी था। बाद में यह गाँव मुगलों ने उजाड़ दिया था। वीर जोगराज सिंह के वंशज उस गांव से भागकर लंढोरा (जिला सहारनपुर) में आकर आबाद हो गये जिन्होंने लंढोरा गुर्जर राज्य की स्थापना की। जोगराजसिंह बालब्रह्मचारी एवं विख्यात पहलवान था। उसका कद 7 फुट 9 इंच और वजन 8 मन था। उसकी दैनिक खुराक चार सेर अन्न, 5 सेर सब्जी-फल, एक सेर गऊ का घी और 20 सेर गऊ का दूध।

महिलाएं वीरांगनाओं की सेनापति चुनी गईं उनके नाम इस प्रकार हैं – (1 रामप्यारी गुर्जर (2) हरदेई जाट (3) देवीकौर राजपूत (4) चन्द्रो ब्राह्मण (5) रामदेई त्यागी। इन सबने देशरक्षा के लिए शत्रु से लड़कर प्राण देने की प्रतिज्ञा की।

उपप्रधान सेनापति-(1) धूला भंगी (बालमीकी) (2) हरबीर गुलिया जाट चुने गये। धूला भंगी जिला हिसार के हांसी गांव (हिसार के निकट) का निवासी था। यह महाबलवान निर्भय योद्धा, गोरीला (छापामार) युद्ध का महान् विजयी धाड़ी (बड़ा महान् डाकू) था जिसका वजन 53 धड़ी था। उपप्रधान सेनापति चुने जाने पर इसने भाषण दिया कि – ''मैंने अपनी सारी आयु में अनेक धाड़े मारे हैं। आपके सम्मान देने से मेरा खून उबल उठा है। मैं वीरों के सम्मुख प्रण करता हूं कि देश की रक्षा के लिए अपना खून बहा दूंगा तथा सर्वखाप के पवित्र झण्डे को नीचे नहीं होने दूंगा। मैंने अनेक युद्धों में भाग लिया है तथा इस युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान दे दूंगा।'' यह कहकर उसने अपनी जांघ से खून निकालकर प्रधान सेनापति के चरणों में अपने खून के छींटे दिये। उसने म्यान से बाहर अपनी तलवार निकालकर कहा ''यह शत्रु का खून पियेगी और म्यान में नहीं जायेगी।'' इस वीर योद्धा धूला के भाषण से पंचायती सेना दल में जोश एवं साहस की लहर दौड़ गई और सबने जोर-जोर से मातृभूमि के नारे लगाये।

दूसरा उपप्रधान सेनापति हरबीरसिंह जाट था जिसका गोत्र गुलिया था। यह हरियाणा के जिला रोहतक गांव बादली का रहने वाला था। इसकी आयु 22 वर्ष की थी और इसका वजन 56 धड़ी (7 मन) था। यह निडर एवं शक्तिशाली वीर योद्धा था।

सेनापतियों का निर्वाचन-उनके नाम इस प्रकार हैं – (1) गजेसिंह जाट गठवाला (2) तुहीराम राजपूत (3) मेदा रवा (4) सरजू ब्राह्मण (5) उमरा तगा (त्यागी) (6) दुर्जनपाल अहीर।

जो उपसेनापति चुने गये – (1) कुन्दन जाट (2) धारी गडरिया जो धाड़ी था (3) भौन्दू सैनी (4) हुल्ला नाई (5) भाना जुलाहा (हरिजन) (6) अमनसिंह पुंडीर राजपुत्र (7) नत्थू पार्डर राजपुत्र (8) दुल्ला (धाड़ी) जाट जो हिसार, दादरी से मुलतान तक धाड़े मारता था। (9) मामचन्द गुर्जर (10) फलवा कहार।

सहायक सेनापति-भिन्न-भिन्न जातियों के 20 सहायक सेनापति चुने गये।

वीर कवि-प्रचण्ड विद्वान् चन्द्रदत्त भट्ट (भाट) को वीर कवि नियुक्त किया गया जिसने तैमूर के साथ युद्धों की घटनाओं का आंखों देखा इतिहास लिखा था।

प्रधान सेनापति जोगराजसिंह गुर्जर के ओजस्वी भाषण के कुछ अंश –

''वीरो! भगवान् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को जो उपदेश दिया था उस पर अमल करो। हमारे लिए स्वर्ग (मोक्ष) का द्वार खुला है। ऋषि मुनि योग साधना से जो मोक्ष पद प्राप्त करते हैं, उसी पद को वीर योद्धा रणभूमि में बलिदान देकर प्राप्त कर लेता है। भारत माता की रक्षा हेतु तैयार हो जाओ। देश को बचाओ अथवा बलिदान हो जाओ, संसार तुम्हारा यशोगान करेगा। आपने मुझे नेता चुना है, प्राण रहते-रहते पग पीछे नहीं हटाऊंगा। पंचायत को प्रणाम करता हूँ तथा प्रतिज्ञा करता हूँ कि अन्तिम श्वास तक भारत भूमि की रक्षा करूंगा। हमारा देश तैमूर के आक्रमणों तथा अत्याचारों से तिलमिला उठा है। वीरो! उठो, अब देर मत करो। शत्रु सेना से युद्ध करके देश से बाहर निकाल दो।''

यह भाषण सुनकर वीरता की लहर दौड़ गई। 80,000 वीरों तथा 40,000 वीरांगनाओं ने अपनी तलवारों को चूमकर प्रण किया कि हे सेनापति! हम प्राण रहते-रहते आपकी आज्ञाओं का पालन करके देश रक्षा हेतु बलिदान हो जायेंगे।

मेरठ युद्ध – तैमूर ने अपनी बड़ी संख्यक एवं शक्तिशाली सेना, जिसके पास आधुनिक शस्त्र थे, के साथ दिल्ली से मेरठ की ओर कूच किया। इस क्षेत्र में तैमूरी सेना को पंचायती सेना ने दम नहीं लेने दिया। दिन भर युद्ध होते रहते थे। रात्रि को जहां तैमूरी सेना ठहरती थी वहीं पर पंचायती सेना धावा बोलकर उनको उखाड़ देती थी। वीर देवियां अपने सैनिकों को खाद्य सामग्री एवं युद्ध सामग्री बड़े उत्साह से स्थान-स्थान पर पहुंचाती थीं। शत्रु की रसद को ये वीरांगनाएं छापा मारकर लूटतीं थीं। आपसी मिलाप रखवाने तथा सूचना पहुंचाने के लिए 500 घुड़सवार अपने कर्त्तव्य का पालन करते थे। रसद न पहुंचने से तैमूरी सेना भूखी मरने लगी। उसके मार्ग में जो गांव आता उसी को नष्ट करती जाती थी। तंग आकर तैमूर हरिद्वार की ओर बढ़ा।

हरिद्वार युद्ध-मेरठ से आगे मुजफ्फरनगर तथा सहारनपुर तक पंचायती सेनाओं ने तैमूरी सेना से भयंकर युद्ध किए तथा इस क्षेत्र में तैमूरी सेना के पांव न जमने दिये। प्रधान एवं उपप्रधान और प्रत्येक सेनापति अपनी सेना का सुचारु रूप से संचालन करते रहे। हरिद्वार से 5 कोस दक्षिण में तुगलुकपुर-पथरीगढ़ में तैमूरी सेना पहुंच गई। इस क्षेत्र में पंचायती सेना ने तैमूरी सेना के साथ तीन घमासान युद्ध किए।

उप-प्रधानसेनापति हरबीरसिंह गुलिया ने अपने पंचायती सेना के 25,000 वीर योद्धा सैनिकों के साथ तैमूर के घुड़सवारों के बड़े दल पर भयंकर धावा बोल दिया जहां पर तीरों तथा भालों से घमासान युद्ध हुआ। इसी घुड़सवार सेना में तैमूर भी था। हरबीरसिंह गुलिया ने आगे बढ़कर शेर की तरह दहाड़ कर तैमूर की छाती में भाला मारा जिससे वह घोड़े से नीचे गिरने ही वाला था कि उसके एक सरदार खिजर ने उसे सम्भालकर घोड़े से अलग कर लिया। (तैमूर इसी भाले के घाव से ही अपने देश समरकन्द में पहुंचकर मर गया)। वीर योद्धा हरबीरसिंह गुलिया पर शत्रु के 60 भाले तथा तलवारें एकदम टूट पड़ीं जिनकी मार से यह योद्धा अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा।

1 उसी समय प्रधान सेनापति जोगराजसिंह गुर्जर ने अपने 22000 मल्ल योद्धाओं के साथ शत्रु की सेना पर धावा बोलकर उनके 5000 घुड़सवारों को काट डाला। जोगराजसिंह ने स्वयं अपने हाथों से अचेत हरबीरसिंह को उठाकर यथास्थान पहुंचाया। परन्तु कुछ घण्टे बाद यह वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गया। जोगराजसिंह को इस योद्धा की वीरगति से बड़ा धक्का लगा।

2 हरिद्वार के जंगलों में तैमूरी सेना के 2805 सैनिकों के रक्षादल पर भंगी कुल के उपप्रधान सेनापति धूला धाड़ी वीर योद्धा ने अपने 190 सैनिकों के साथ धावा बोल दिया। शत्रु के काफी सैनिकों को मारकर ये सभी 190 सैनिक एवं धूला धाड़ी अपने देश की रक्षा हेतु वीरगति को प्राप्त हो गये।

(3) तीसरे युद्ध में प्रधान सेनापति जोगराजसिंह ने अपने वीर योद्धाओं के साथ तैमूरी सेना पर भयंकर धावा करके उसे अम्बाला की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। इस युद्ध में वीर योद्धा जोगराजसिंह को 45 घाव आये परन्तु वह वीर होश में रहा। पंचायती सेना के वीर सैनिकों ने तैमूर एवं उसके सैनिकों को हरिद्वार के पवित्र गंगा घाट (हर की पौड़ी) तक नहीं जाने दिया। तैमूर हरिद्वार से पहाड़ी क्षेत्र के रास्ते अम्बाला की ओर भागा। उस भागती हुई तैमूरी सेना का पंचायती वीर सैनिकों ने अम्बाला तक पीछा करके उसे अपने देश हरियाणा से बाहर खदेड़ दिया।

वीर सेनापति दुर्जनपाल अहीर मेरठ युद्ध में अपने 200 वीर सैनिकों के साथ दिल्ली दरवाजे के निकट स्वर्ग लोक को प्राप्त हुये।

इन युद्धों में बीच-बीच में घायल होने एवं मरने वाले सेनापति बदलते रहे थे। कच्छवाहे गोत्र के एक वीर राजपूत ने उपप्रधान सेनापति का पद सम्भाला था। तंवर गोत्र के एक जाट योद्धा ने प्रधान सेनापति के पद को सम्भाला था। एक रवा तथा सैनी वीर ने सेनापति पद सम्भाले थे। इस युद्ध में केवल 5 सेनापति बचे थे तथा अन्य सब देशरक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुये।

इन युद्धों में तैमूर के ढ़ाई लाख सैनिकों में से हमारे वीर वीरांगनाओं ने 1,60,000 को मौत के घाट उतार दिया और तैमूर की आशाओं पर पानी फेर दिया।

हमारी पंचायती सेना के वीर एवं वीरांगनाएं 35,000, देश के लिये वीरगति को प्राप्त हुए थे।

प्रधान सेनापति की वीरगति – वीर योद्धा प्रधान सेनापति जोगराजसिंह गुर्जर युद्ध के पश्चात् ऋषिकेश के जंगल में स्वर्गवासी हुये थे।

(सन्दर्भ-जाट वीरों का इतिहास: दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त-379-383)

ध्यान दीजिये। एक सवर्ण सेना का उपसेनापति वाल्मीकि था। अहीर, गुर्जर से लेकर 36 बिरादरी उसके महत्वपूर्ण अंग थे। तैमूर को हराने वाली सेना को हराने वाला कौन थे? क्या वो जाट थे? क्या वो राजपूत थे? क्या वो अहीर थे? क्या वो गुर्जर थे? क्या वो बनिए थे? क्या वो भंगी या वाल्मीकि थे? क्या वो जातिवादी थे?

नहीं वो सबसे पहले देशभक्त थे। धर्मरक्षक थे। श्री राम और श्रीकृ ष्ण की संतान थे? गौ, वेद , जनेऊ और यज्ञ के रक्षक थे।

आज भी हमारा देश उसी संकट में आ खड़ा हुआ है। आज भी विधर्मी हमारी जड़ों को काट रहेहैं। आज भी हमेंफिर से जातिवाद से ऊपर उठ कर एकजुट होकर अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी मातृभूमि की रक्षा का व्रत लेना हैं। यह तभी सम्भव है जब हम अपनी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर सोचना आरम्भ करेंगे।

यज्ञ के साथ हुआ हैदराबाद पुस्तक मेला में वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल का उद्घाटन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 15 से 26 दिसम्बर 2016 तक हैदराबाद के एन.टी. आर. स्टेडियम में आयोजित हैदराबाद पुस्तक मेले में आर्य समाज साहित्य केन्द्र का उद्घाटन यज्ञ के द्वारा किया गया। जिसको हैदराबाद के मीडिया द्वारा बहुत सराहा गया। 22 दिसम्बर को स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक रोजड़ का उपदेश हैदराबाद पुस्तक मेले में आयोजित किया गया। स्वामी जी ने 'दु:ख का स्वरूप कारण एवं निवारण' विषय पर प्रवचन दिया। साहित्य केन्द्र द्वारा लगभग दो लाख रुपये मूल्य वाले तेलगू, हिन्दी एवं अंग्रेजी वैदिक साहित्य को आम जनता ने बड़े उत्साह के साथ खरीदा।

-डॉ. धर्मतेजा

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विराट आर्य महासम्मेलन भुवनेश्वर में सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विराट आर्य महासम्मेलन भुवनेश्वर में 23 से 25 दिसम्बर के मध्य सम्पन्न हुआ। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, गुरुकुल गौतम नगर के स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, वैदिक विद्वान सोमदेव शास्त्री, आई.पी.एस. श्री आनन्द कुमार आदि अनेक विद्वान पधारे। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती और 'संवाद' के सम्पादक श्री सोम्या रंजन पटनायक ने दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के पुरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य सुदर्शन देव, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र इत्यादि ने अपने-अपने विचार रखे।

- विरेन्द्र पाण्डा, मन्त्री

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2073-74 तद्नुसार सन् 2017

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	माघ कृष्ण, 1 वि. 2073	13/01/2017	शुक्रवार
2.		मकर-संक्रान्ति	माघ कृष्ण, 2 वि. 2073	14/01/2017	शनिवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्ण, 14 वि. 2073	26/01/2017	गुरुवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2073	1/02/2017	बुधवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2073	19/02/2017	रविवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2073	21/02/2017	मंगलवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2073	24/02/2017	शुक्रवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2073	1/03/2017	बुधवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2073	12/03/2017	रविवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2074	28/03/2017	मंगलवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2074	5/04/2017	बुधवार
12.		वैशाखी	बैशाख कृष्ण, 2 वि. 2074	13/04/2017	गुरुवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख कृष्ण 15 वि.2074	26/04/2017	बुधवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2074	26/07/2017	बुधवार
15.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2074	07/08/2017	सोमवार
		हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2074		
16		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2074	15/08/2017	मगलवार
17		स्वतन्त्रता दिवस	भद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2074	15/08/2017	मंगलवार
18.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2074	30/09/2017	शनिवार
19.		गांधी जयन्ती	अश्विन शुक्ल, 12 वि. 2074	02/10/2017	सोमवार
20.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2074		
21.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2074	19/10/2017	गुरुवार
22.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष शुल्क, 5, वि. 2074	23/12/2017	शनिवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Bird of the Soul

"O Soul, these two are your never-ageing wings, capable of flying high, with which you drive away evil forces. May you soar above to the region of the virtuous, whereto the first born ancient seers have gone".

The soul is blessed with two divine wings : wisdom and action. Wisdom bestows light, while action imparts strength. The two distinct sets of organs provided in the human body, the sensitive and the executive, are the two wings of the master Soul. Truly, there is no such difficult work in the world which cannot be accomplished by noble deeds backed with knowledge. There is no such critical situation which cannot be faced and solved with right knowledge and right action.

O Soul, in yout endless journey to liberation, you may meet many demoniac forces on the way. Negative elements, may obstruct and frustrate the noble causes. But with your great wisdom and courage, you can successfuly overcome all barriers. Realise your own value and proceed for success. Give due attention to the balanced development of the head, heart and hands. In the long run, the wide and the industrious person only is able to eradicate the devilish powers that hinder the progress of life.

इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यांरक्षांस्यपहंस्यग्ने।
ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्रऽ ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ।। (Yv.XVIII.52)

Imau te paksavajaru patatrinau yabhyam raksam syapahamsyagne.

tabhyam patema sukrtamu lokam yatra rsayo jagmuh prathamajah puranah..

Mind and Its Behaviour

Chapter XXXIV of Yajurveda starts with six verses depicting the behaviour of human mind. In the light of these verses, the preceptor of the Upanishad composes a metaphor; "Just as the horses behave when held in by the reins, the body organs such as eyes and ears behave likewise when governed by the mind."

"This mind of an awakened person endowed with divine virtues moves far and high; while that of a person asleep moves in the same way reaching far and wide. The mind is the sole enlightener of all the lights. May the mind of mine be always guided by the best of intentions, I pray."

"which mind lie a skilful charioteer has speedy horses and which leads and controls men as if holding them by the reins and which is well-placed within the heart, and is free from decay, this mind of mine the speediest of all, may ever be guided by the best of intentions, I pray."

यज्जागृतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। (Yv.XXXIV.1)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या न्नेनीयते ऽ भीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। (Yv.XXXIV.6)

Yajjagrato duramudaiti daivam tadu suptasya tathaivaiti.

durangamam jyotisam jyotirekam tanme manah sivasankalpamastu..

Susarathirasvaniva yanmanusyanneniyate bhisubhirvajinaiva.

hrtpratistham yadajiram javistam tanme manah siva sankalpamastu..

The Three Worlds within Man

"Ye man, I lay heaven and earth within you. I place the vast midspace in you. Live the life of amity and harmony amidst the bounties of Nature. Help the needy, show cordiality even to those who envy you."

Human body is very mysterious. It is an effective and illustrious tool for the soul. It can help him attain the highest bliss. Aitareya Upanishad speaks of the richness of body: 'Fire entered into the mouth taking the form of speech; air entered the nostrils assuming the form of the sense of smell; the sun entered into the eyes as the sense of sight; the directions entered into the ears by becoming the sense of hearing; the herbs and trees entered into the skin in the form of hairs; the moon entered into the heart in the shape of the mind; (I.2.4)". The present verse of Yajurveda says: The top of human body represents the celestial region with radiance of the brain and the distinguishable face. The middle portion is the symbol of midspace comprising the infinite sky of the heart with the brightness of compassion, love and devotion. The lower part portrays the firmness of earth. The more man realizes the splendour of his body which he possesses, the more shall he become conscious of his duties and destination of life.

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधा म्युर्वन्तरिक्षम्।
सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व।। (Yv.VII.5)

Antaste dyavaprthivi dadhamyantardadha myurvantariksam.

sajurdevebhiravaraih paraiscantaryame maghavan madayasva.. **To be Conti....**

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 19

महर्षि पाणिनि एवम् व्याकरण शास्त्र की अनुपम कृति अष्टाध्यायी

गतांक से आगे....

अष्टाध्यायी (अष्टाध्यायी = आठ अध्यायों वाली) महर्षि पाणिनि द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण का एक अत्यंत प्राचीन ग्रंथ (500 ई.पू.) है। इसमें आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में 38 से 220 तक सूत्र हैं। इस प्रकार अष्टाध्यायी में आठ अध्याय, बत्तीस पाद और सब मिलाकर लगभग 3155 सूत्र हैं। अष्टाध्यायी पर महर्षि कात्यायन का विस्तृत वार्तिक ग्रन्थ है और सूत्र तथा वार्तिकों पर भगवान पतञ्जलि का विशद विवरणात्मक ग्रन्थ महाभाष्य है। संक्षेप में सूत्र, वार्तिक एवं महाभाष्य तीनों सम्मिलित रूप में 'पाणिनीय व्याकरण' कहलाता है और सूत्रकार पाणिनी, वार्तिककार कात्यायन एवं भाष्यकार पतञ्जलि - तीनों व्याकरण के 'त्रिमुनि' कहलाते हैं।

अष्टाध्यायी छह वेदांगों में मुख्य माना जाता है। अष्टाध्यायी में 3155 सूत्र और आरंभ में वर्णसमाम्नाय के 14 प्रत्याहार सूत्र हैं। अष्टाध्यायी का परिमाण एक सहस्र अनुष्टुप श्लोक के बराबर है। महाभाष्य में अष्टाध्यायी को ''सर्ववेद-परिषद्-शास्त्र'' कहा गया है। अर्थात् अष्टाध्यायी का संबंध किसी वेदविशेष तक सीमित न होकर सभी वैदिक संहिताओं से था और सभी के प्रातिशरूप अभिमतों का पाणिनि ने समादर किया था। अष्टाध्यायी में अनेक पूर्वाचार्यो के मतों और सूत्रों का संनिवेश किया गया है। उनमें से शाकटायन, शाकल्य, अभिशाली, गार्ग्य, गालव, भारद्वाज, कश्यप, शौनक, स्फोटायन, चाक्रवर्मण का उल्लेख पाणिनि ने किया है।

अष्टाध्यायी का समय : अष्टाध्यायी के कर्ता पाणिनि कब हुए, इस विषय में कई मत हैं। भंडारकर और गोल्डस्टकर इनका समय 7वीं शताब्दी ई.पू. मानते हैं। मैकडानेल, कीथ आदि कितने ही विद्वानों ने इन्हें चौथी शताब्दी ई.पू. माना है। भारतीय अनुश्रुति के अनुसार पाणिनि नंदों के समकालीन थे और यह समय 5वीं शताब्दी ई.पू. होना चाहिए। पाणिनि में शतमान, विंशतिक और कार्षापण आदि जिन मुद्राओं का एक साथ उल्लेख है उनके आधार पर एवं अन्य कई कारणों से हमें पाणिनि का काल यही समीचीन जान पड़ता है।

संरचना : अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। पहले दूसरे अध्यायों में संज्ञा और परिभाषा संबंधी सूत्र हैं एवं वाक्य में आए हुए क्रिया और संज्ञा शब्दों के पारस्परिक संबंध के नियामक प्रकरण भी हैं, जैसे क्रिया के लिए आत्मनेपद- परस्मैपद- प्रकरण, एवं संज्ञाओं के लिए विभक्ति, समास आदि। तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्यायों में सब प्रकार के प्रत्ययों का विधान है। तीसरे अध्याय में धातुओं में प्रत्यय लगाकर दंत शब्दों का निर्वचन है और चौथे तथा पाँचवें अध्यायों में संज्ञा शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बने नए संज्ञा शब्दों का विस्तृत निर्वचन बताया गया है। ये प्रत्यय जिन अर्थविषयों को प्रकट करते हैं उन्हें व्याकरण की परिभाषा में वृत्ति कहते हैं, जैसे वर्षा में होनेवाले इंद्रधनु को वार्षिक इंद्रधनु कहेंगे। वर्षा में होने वाले इस विशेष अर्थ को प्रकट करने वाला 'इक' प्रत्यय तद्धित प्रत्यय है। तद्धित प्रकरण में 1,190 सूत्र हैं और दंत प्रकरण में 631। इस प्रकार दंत, तद्धित प्रत्ययों के विधान के लिए अष्टाध्यायी के 1,821 अर्थात् आधे से कुछ ही कम सूत्र विनियुक्त हुए हैं। छठे, सातवें और आठवें अध्यायों में उन परिवर्तनों का उल्लेख है जो शब्द के अक्षरों में होते हैं। ये परिवर्तन या तो मूल शब्द में जुड़ने वाले प्रत्ययों के कारण या संधि के कारण होते हैं। द्वित्व, संप्रसारण, संधि, स्वर, आगम, लोप, दीर्घ आदि के विधायक सूत्र छठे अध्याय में आए हैं। छठे अध्याय के चौथे पाद से सातवें अध्याय के अंत तक अंगाधिकार नामक एक विशिष्ट प्रकरण है जिसमें उन परिवर्तनों का वर्णन है जो प्रत्यय के कारण मूल शब्दों में या मूल शब्द के कारण प्रत्यय में होते हैं।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

स्वामी श्रद्धानन्द के आगमन पर

सिख भाई प्रायः यह प्रचार करते हैं कि हमने हिन्दुओं की रक्षा की। अमुक समय पर की, तमुक समय पर की, पर हम हिन्दू नहीं हैं। कभी भी किसी सिख नेता ने यह नहीं कहा कि हिन्दुओं का हम पर कुछ उपकार है। दस गुरु तो सिख थे नहीं! तब तक पृथकतावाद की दूषित भावना थी ही नहीं। इस युग में सिखों ने सन् 1922 में एक मोर्चा लगाया। उसमें स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज अकाल तख्त से सिखों की रक्षा के लिए भाषण देकर अंग्रेजों की जेल में गये। जब स्वामीजी मियाँवाली जेल में पहुँचाये गये तो जेल में हिन्दू, सिख, मुसलमान राजनैतिक बन्दियों को यह सूचना मिली कि श्री महाराज इस जेल में पधारे हैं। सिख तो गुरुद्वारा आन्दोलन में वहाँ पहुँचाये ही जाते थे।

सारा जेल स्वामी जी के आगमन पर गगन-भेदी जयकारों से गूँज उठा-

'सत् श्री अकाल', 'वन्दे मातरम्' , 'अल्लाहो अकबर'

सारे अंग्रेजी शासनकाल में किसी भी कांग्रेसी अथवा अन्य नेता के स्वागत-सम्मान में हिन्दू, मुसलमान व सिख लोगों ने ऐसा हर्षोल्लास व सम्मान व्यक्त नहीं किया। यह श्री श्रद्धानन्दजी की ही निराली शान थी!

स्वामीजी ने अपने बन्दी जीवन पर एक पुस्तक लिखी थी। यह विश्व में अन्यत्र कहीं भी नहीं। एक जीर्ण-शीर्ण प्रति हमारे पास ही है। इसे सम्पादित कर हमने छपवा दिया है। उसमें से यह घटना ली है।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज प्रशान्त विहार का 32वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज प्रशान्त विहार ए ब्लाक, दिल्ली का 32वां वार्षिकोत्सव समारोह 4 जनवरी से 8 जनवरी, 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी होंगे तथा भजनोपदेश श्री देवेन्द्र जी होंगे। समापन एवं पूर्णाहुति 8 जनवरी को होगी।

– सोहन लाल मुखी, मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर बच्चों ने किया नगर भ्रमण

आर्य समाज समस्तीपुर (बिहार) के तत्त्वावधान में 23 दिसम्बर 2016 को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस पर बच्चों ने आर्य समाज रोड पर नगर भ्रमण किया। बच्चों ने हाथों में केसरिया झंडा लिया हुआ था व स्वामी श्रद्धानन्द अमर रहें का उद्घोष कर रहे थे। बच्चों का नेतृत्व आर्य समाज समस्तीपुर के सर्वश्री डॉ. अरुण कुमार गुप्ता, कुमारी संगीता, जगदीश राय, विद्याभूषण महतो, रेणु कुमारी, खुशबू कुमारी, ज्योति कुमारी, ओम प्रकाश खेमका ने सामूहिक रूप से किया। नगर भ्रमण के पूर्व आर्य समाज में विश्व शांति यज्ञ आयोजित किया गया। *–आदर्श आर्य*

हकीकत राय बलिदान दिवस

अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में 1 फरवरी प्रात: 10 बजे से हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग नई दिल्ली में 'बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह' आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम हिन्दू वीरों का सम्मान एवं बाल प्रतिभा खोज समारोह श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। *–वीरेश त्यागी*

एक दिन ऐसा जिसने फिर झकझोरा मुझे

पूछा सवाल मेरी आत्मा ने,
वजूद क्या तेरे अस्तित्व का ये बता मुझे।

एक फूल सी मासूम जान ने,
आंखे दुनिया में खोली।

मिलनी थी गोद मां की,
पर पनाह उसे झाड़ियों ने दी।
हाथ भी लगाने से डर लगता हो,
जिस नाजुक बदन को।

उसे कंकरों से थी दुलार मिली,
क्या खता थी उसकी।

जो सजा ऐसी भयावह मिली,
खता तो है पर उसकी नहीं।
है उसकी जिसने उसे बनाया लड़की,
पर किस्मत उसकी दगाबाज हुई।
सजा मिलनी थी किसे और,
ना इंसाफी किसके साथ हुई।

कौन करेगा फैसला अब,
जिसने किया उसका कोई पता नहीं।
जिसे कुछ पता नहीं,
वो सबके सामने शर्म सार हुई ।

– सोनिया रानी, बड़ौत

कोचिंग छात्रों को 10 रुपये में सत्यार्थ प्रकाश वितरित

आर्य समाज जिला सभा कोटा एवं आर्य समाज तलवण्डी द्वारा कोटा शहर के झालावाड़ रोड स्थित सिटीमॉल के बाहर कोचिंग छात्रों को दस रुपये मात्र में सत्यार्थ प्रकाश दिये गये। प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, रामचरण आर्य, कैलाश बाहेती, शान्तनु शर्मा, कृष्णन राजगुरु एवं राजीव आर्य के दल ने सिटीमॉल के बाहर माइक से आवाज लगाकर कोचिंग छात्रों को बुलाकर उत्साह पूर्ण माहौल में सत्यार्थ प्रकाश दिये। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार के अवसर पर आचार्य ने ग्रंथ के बारे में छात्रों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर एवं उनकी शंकाओं का समाधान किया।

– आर. सी.आर्य, प्रधान

गुरुकुल आश्रम, सलखिया का वार्षिकोत्सव

आर्य विद्या सभा गुरुकुल आश्रम, सलखिया जिला रायगढ़ (छ.ग.) 15 से 17 जनवरी 2017 के मध्य भव्य वार्षिकोत्सव का आयोजन आश्रम क्षेत्र में कर रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्र पर चिंतन, गौ कथा, वेदपर आधारित ईश्वर भक्ति एवं सामाजिक परिचर्चा, सामूहित संध्या, यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन इत्यादि किया जाएगा। *–महीपत लाल आर्य*

राष्ट्र निर्माण में समर्पण भाव से सहयोग करने का संकल्प लिया

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर के सानिध्य में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर जोधपुर के सभी आर्य समाजों के सहयोग से स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यो को जीवन का आदर्श बनाकर राष्ट्र निर्माण में समर्पण भाव से सहयोग करने का दृढ़ संकल्प लिया गया। इस अवसर पर विक्रम आर्य व मदन जी तंवर ने भजनों के माध्यम से, रूपवती देवड़ा व कमल किशोर ने स्वामी जी के जीवन पर, राधेश्याम जी ने कविताओं के रूप में, अपने-अपने विचार प्रकट किये। सेवाराम जी ने स्वामी जी के व्यक्तित्व का बखान करते हुए कहा कि वो आर्य आर्यवीर जिसने उस समय देश को हिला दिया और मौत से नहीं डरा, पारितोषिक भी वापस कर दिया यह कहानी आर्यवीर की पहचान है। *–शिवराम आर्य, मंत्री*

शोक समाचार

आर्य समाज अमरोह के वरिष्ठ संरक्षक श्रीराम गुप्त जी का का 90 वर्ष की अवस्था में गत दिनों निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी की पुत्रवधू रीना जायसवाल 'बेस्ट सोशल वर्क' अवार्ड से सम्मानित

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्व. पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी की पुत्रवधू रीना जायसवाल को मार्बलस रिकार्ड्स बुक ऑफ इण्डिया की ओर से लखनऊ के संगीत नाटक अकादमी विपिन खण्ड के सभागार में विमोचन एवं सम्मान समारोह के अवसर पर 'बेस्ट सोशल वर्क' अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्रीमती रीना जायसवाल को हाल ही में 'क्षेत्रीय प्रतिभा सम्मान 2016' बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ से सम्मानित किया गया था। रीना जायसवाल रंगमंच के क्षेत्र में 50 से अधिक नाटकों का राष्ट्रीय स्तर पर मंचन, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी में अनेक प्रस्तुतिकरण, शूटिंग प्रतियोगिता में उ.प्र. स्तर पर 'स्वर्ण पदक' एवं राष्ट्रीय स्तर पर 'कास्य पदक' भी प्राप्त कर चुकी हैं।

–विपिन बिहारी श्रीवास्तव, अध्यक्ष

केरलीय गुरुकुल का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल पण्डित ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय, कारलमन्ना, केरल का प्रथम वेदायणम् वार्षिक उत्सव 25 दिसम्बर 2016 को मुख्य अतिथि स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, बंलूर, तेलंगाणा की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। स्वामी जी ने प्रत्येक मानस में गहराई तक गुरुकुल के महत्त्व की भावनाएं भरकर गुरुकुल को तन-मन-धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया। गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री के.एम. राजन ने मुख्य अथिति के करकमलों द्वारा मलयालम भाषा में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक का विमोचन कराकर लोगों को सत्यासत्य को जानकर वास्तविक रूप में आस्तिक बनने का अवसर प्रदान किया।

गुरुकुल द्वारा 26 दिसम्बर को आर्यवीर दल शिविर का आयोजन किया गया जिसमें किशोरों को शारीरिक व मानसिक रूप से सबल व आर्य बनाने का भरसक प्रयास किया गया। कार्यक्रम में संन्यासियों, आचार्यों, प्रांतीय नगर सभा के अधिकारियों, पार्षद व अन्य सभाध्यक्षों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह में आये अनेक जनमानस ने गुरुकुल से सम्बद्ध होने का आश्वासन दिया जोकि गुरुकुल की सफलता का प्रतीक है।

–के.एम. राजन. अधिष्ठाता

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज खेड़ा रसूलपुर
प्रधान – श्री राम नारायण कुशवाह
मंत्री – श्री बंसीलाल रेनवाल
कोषाध्यक्ष – हीरालाल गहलोत

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।– *सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे –

23.श्री हिमाशु प्रसाद, बैंगलोर	500
24.श्री प्रवण भट्टाचार्य	1000
25.श्री खुशीराम यादव, लाडपुर	1000
26.आचार्य आनन्द आर्य	100
27.ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट	21000
28.आ.स.जनकपुरी बी ब्लाक	10000

– क्रमश:

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। – *महामन्त्री*

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/6 जनवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 जनवरी 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की
अमूल्य देन उर्दू भाषियों के लिए
उर्दू सत्यार्थ प्रकाश

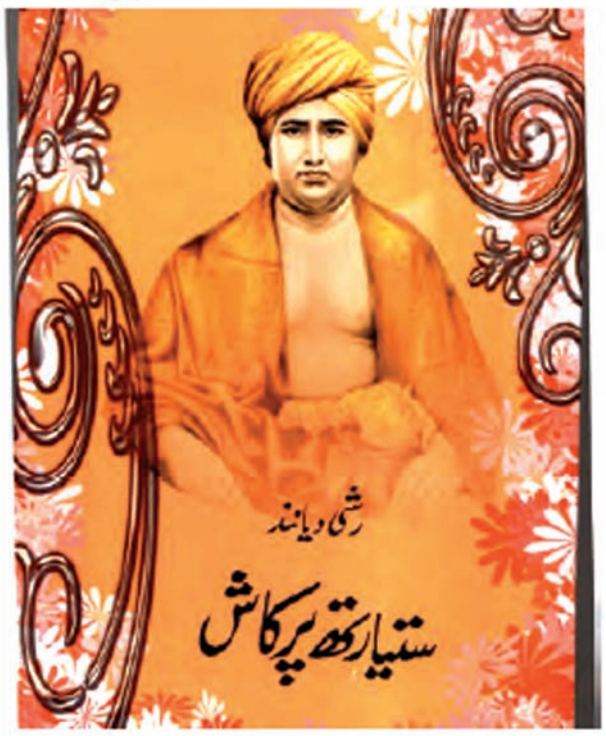

प्राप्ति स्थान:- वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 09540040339

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

17वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

22 जनवरी, 2017 आर्यसमाज अशोक विहार-1

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 22 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम खाता संख्या **910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग** शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। **आवेदन भेजने की अन्तिम तिथि 9 जनवरी, 2017 है।** इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www. thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भी कर सकते हैं।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक
(मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली
(मो. 9540040324)

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह